सावन की ऋतू झूलों की बहार है | by Krishna Pallavi Das

सावन की रितु झूलों की बहार है
रिमझिम रिमझिम पड़ने लगी फुहार है

वृन्दावन की कुंजे सज गई
बरसाने में पता ये चल गई
नन्द गाँव से आये नन्द कुमार हैं
रिमझिम रिमझिम पड़ने लगी फुहार है
सावन की रितु.....

राधा संग विशाखा आई
संग में सखी सहेली आई
करके आई ये सोलह श्रृंगार हैं
रिमझिम रिमझिम पड़ने लगी फुहार है
सावन की रितु.....

वृक्ष कदम्ब पे झूला डारयो
श्यामा जो को लग्यो है प्यारो
हौले झोटा देवे नन्द कुमार है
रिमझिम रिमझिम पड़ने लगी फुहार है
सावन की रितु.....

तनुज के मन को भावे सावन
प्रेम सुधा सुख रस सा पावन
कृष्ण पल्लवी को भी इनसे प्यार है
रिमझिम रिमझिम पड़ने लगी फुहार है
सावन की रितु.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%b5%e0%a4%a8-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%8b%e0%a4%a4%e0%a5%82-%e0%a4%9d%e0%a5%82%e0%a4%b2%e0%a5%8b%e0%a4%82-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%ac%e0%a4%b9%e0%a4%be%e0%a4%b0-%e0%a4%b9/